• कविताएं...

परहेज...

मैं सांस लेना चाहती हूं करवट बदलती
इस दुनिया में
मैं भी सदियों की कैद से मुक्त हो
खोल देना चाहती हूं
अपने पंख
मैं उन आदमियों की स्याह बस्तियों में
जाना चाहती हूं
जिनकी परछाई से भी दूर रहे
हमारे पुरखे
जो खेतों में हमारे लिए
पैदा करते रहे अनाज
जो हमारे घर-बाहर को
साफ-सुथरा बनाते रहे
जो हमारे देवी-देवताओं को
तराशते रहे हमारे लिए
लेकिन जिनके मुंह पर बंद होते रहे
हमारे मंदिरों के पट
मैं उनके पास बैठ उनसे
पूछना चाहती हूं
उन्हें तो मेरी परछाई से
कोई परहेज नहीं...?

-किरण अग्रवाल

सियाह पट्टी...

हम अभी कुछ देर पहले साथ थे
शहर सारा यूं लगा था
जैसे अपने ही तआक़ुब में
किरन सूरज की थामे चल रहा है
उस की आंखें बन के पत्थर उठ रही थीं
कुर्ब के आईने छन से टूट कर
रेज़ा हुए थे
होंट अपने सिल गए थे
जिस्म अपने जल गए थे
हम बिछड़ के ना-मुरादों की तरह
वापस हुए तो
शहर सारा अजनबी सा हो गया है
उस की आखों पर सियाह पट्टी बंधी है।

-जुबैर रिज़वी

• कहानी/-रवींद्रनाथ टैगोर...

धन की भेंट...

गतांक से आगे...

परन्तु जगन्नाथ उत्तर दिए बिना ही मन्त्र पढ़ता रहा।

अन्त में मन्त्रों का सिलसिला समाप्त हुआ और जगन्नाथ ने बड़ी कठिनाई से एक टोकने को खींचकर लड़के के सम्मुख रखा और ये शब्द विवशता से उसके मुख से कहलवाये- मैं सच्चे हृदय से प्रतिज्ञा करता हूं कि इस सारी धन-संपत्ति को गोकुलचन्द कुण्डू या वृन्दावन कुण्डू वल्द जगन्नाथ कुण्डू या गोकुलचन्द कुण्डू के बेटे, पोते, परपोते; या उसकी औलाद के किसी व्यक्ति को जो इसका वास्तविक और योग्य उत्तराधिकारी होगा दे दूंगा।

अनेक बार शब्दों के कहने में भोले लड़के की चेतना जाती रही और कण्ठ सूखने लगा।

जैसे-तैसे यह रस्म समाप्त हुई, गुफा की वायु, दीपक के धुएं और दोनों के सांस के कारण बुरी मालूम होने लगी। नितई को अपना कण्ठ मिट्टी की भांति सूखा और हाथ-पांव जलते हुए अनुभव हो रहे थे। बेचारे का दम घुटा जा रहा था।

दीपक धीरे-धीरे मध्दिम होता गया, यहां तक कि अन्तिम झोंका खाकर बुझ गया। इसके पश्चात अंधेरा। नितई को ऐसा लगा कि वृद्ध जल्दी-जल्दी सीढ़ी से ऊपर चढ़ रहा है। उसने घबराकर पूछा- बाबा तुम कहां जा रहे हो?

जगन्नाथ ने निरन्तर ऊपर की ओर चढ़ते हुए उत्तर दिया- मैं अब जाता हूं, तुम यहां रहो, यहां तुम्हें कोई ढूंढ़ न सकेगा। वृन्दावन के बेटे और जगन्नाथ के पोते गोकुलचन्द का नाम याद रखना।

इसके पश्चात उसने ऊपर जाकर सीढ़ी खींच ली। लड़के ने अवरुद्ध और दयनीय स्वर में कहा- मैं अब अपने पिता के पास जाना चाहता हूं, यहां मुझे भय लगता है।

जगन्नाथ ने उसकी परवाह न करते हुए गुफा के मुंह पर पत्थर की शिला रख दी। इसके पश्चात दोनों जंघाओं को मोड़कर झुका और अपने कान पत्थर के समीप लगाकर सुनने लगा। अन्दर से आवाज आई, बाबाजी! बाबाजी! फिर किसी भारी वस्तु के फर्श पर गिरने की आवाज सुनाई दी और इसके बाद निस्तब्धता छा गई।

इस प्रकार अपनी संपत्ति उसको सौंपकर वृद्ध जगन्नाथ ने जल्दी-जल्दी पत्थर के ऊपर मिट्टी डालनी आरम्भ कर दी। उस पर उसने टूटी-फूटी ईंटें और चूना रख दिया और फिर मिट्टी बिछाकर उसमें जंगली घास और बूटियों की जड़ें गाड़ दीं।

रात सम्भवतः समाप्त हो चुकी थी। परन्तु वह उस स्थान से हटकर घर न जा सका, रह-रहकर अपना कान पृथ्वी पर लगाता और आवाज सुनने का प्रयत्न करता। ऐसा मालूम होता था कि अब भी उस गुफा के अन्दर या पृथ्वी की अथाह गहराइयों में से एक वेदनायुक्त क्रन्दन सुनाई दे रहा है। उसे ऐसा भान होता था कि रात में आकाश पर केवल वही एक आवाज छाई हुई है और

इतने में सूर्य उदय हुआ और जगन्नाथ कुण्डू मन्दिर को छोड़कर खेतों की ओर आ गया। वहां भी किसी ने उसके पीछे से आवाज दी- बापू! घबराहट की दशा में जगन्नाथ ने पीछे फिरकर देखा तो उसका पुत्र वृन्दावन था।

वृन्दावन कहने लगा- मुझे पता चला है कि मेरा बेटा आपके घर में छिपा हुआ है, उसे मुझे दे दो। यह सुनकर वृद्ध के नेत्र विस्तृत हो गये, मुंह चौड़ा हो गया और उसने मुड़कर पूछा-क्या कहा? तुम्हारा बेटा?

संसार के सब व्यक्ति उस आवाज से जागकर बिस्तरों में बैठे उसे सुनने का प्रयत्न कर रहे हैं।...

पागल वृद्ध आवेश में आकर और अधिक मिट्टी डाले जाता था। वह चाहता था कि उस आवाज को दबा दे; किन्तु इस पर भी रह-रहकर वह आवाज उसके कानों में आ रही थी- बाबाजी! हाय बाबाजी!

उसने पूरी शक्ति से धरती पर पांव मारकर चिल्लाते हुए कहा- चुप रहो, लोग तुम्हारी आवाज सुन लेंगे।

फिर भी उसे मालूम हुआ कि हाय बाबा जी! हाय बापू! की आवाजें रह-रहकर सुनाई दे रही हैं।

इतने में सूर्य उदय हुआ और जगन्नाथ कुण्डू मन्दिर को छोड़कर खेतों की ओर आ गया।

वहां भी किसी ने उसके पीछे से आवाज दी- बापू! घबराहट की दशा में जगन्नाथ ने पीछे फिरकर देखा तो उसका पुत्र वृन्दावन था।

वृन्दावन कहने लगा- मुझे पता चला है कि मेरा बेटा आपके घर में छिपा हुआ है, उसे मुझे दे दो।

यह सुनकर वृद्ध के नेत्र विस्तृत हो गये, मुंह चौड़ा हो गया और उसने मुड़कर पूछा-क्या कहा? तुम्हारा बेटा?

वृन्दावन ने कहा- हां, मेरा बेटा गोकुल, अब उसका नाम नितईपाल है और मैंने अपना नाम दामोदरपाल प्रसिद्ध कर रखा है। तुम्हारी मनहूसी और कंजूसी की बात चारों ओर इतनी अधिक फैल चुकी थी कि विवश होकर मुझे अपना वास्तविक नाम बदलना पड़ा। वरना सम्भव था कि लोग हमारा नाम लेने से भी सकुचाते।

वृद्ध ने धीरे से दोनों हाथ सिर के ऊपर उठाए। उसकी उंगलियां इस प्रकार कांपने लगी, मानो वह वायु में किसी अदृश्य वस्तु के पकड़ने का प्रयत्न कर रही हों। फिर वह अचेत होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। जब उसे चेत हुआ तो वह अपने बेटे की बांह पकड़कर उसे घसीटता हुआ पुराने मन्दिर के समीप ले गया और पूछने लगा-तुम्हें इसके अन्दर से रोने की आवाज सुनाई देती है?

वृन्दावन ने उत्तर दिया-नहीं?

वृद्ध ने कहा- ध्यान से सुनो, कोई आवाज अन्दर से बाबाजी! बाबा जी! कहती सुनाई नहीं देती?

वृन्दावन ने फिर कान लगाकर उत्तर दिया- नहीं।

इससे वृद्ध जगन्नाथ की चिन्ता किसी सीमा तक दूर हो गई, साथ ही उसके मस्तिष्क ने भी उसे जवाब दे दिया।

उस दिन के पश्चात उसकी दशा यह थी कि गांव में आवारा फिरता और लोगों से पूछा करता- तुम्हें किसी के रोने की आवाज तो नहीं सुनाई देती?

लोग उसके पागलपन पर ठहाका लगाते।

इसके लगभग चार वर्ष पश्चात जगन्नाथ मृत्यु-शैया पर पड़ा था। संसार का प्रकाश धीरे-धीरे उसके नेत्रों के सामने से दूर होता जा रहा था और सांस अधिक कष्ट से आने लगी थी। सहसा वह विक्षिप्त अवस्था में उठकर बैठ गया। उसने अपने दोनों हाथ ऊपर को उठा लिये और वायु में इस प्रकार चलाने लगा जैसे किसी वस्तु को टटोल रहा हो और कहने लगा-मेरी सीढ़ी किसने उठा ली?

उस भयानक बन्दी-गृह में से, जहां न देखने को प्रकाश और न सांस लेने के लिए वायु थी, बाहर निकलने के लिए सीढ़ी न पाकर वह फिर अपनी मृत्यु-शैया पर गिर पड़ा और जहां संसार की स्थायी आंख-मिचौनी के खेल में कोई छिपने वाला पाया नहीं गया

-समाप्त

• शायरी...

मंज़िलों तक मंज़िलों की आरज़ू रह जाएगी
कारवां थक जाएं फिर भी जुस्तजू रह जाएगी
ऐ दिल-ए-नादां तुझे भी चाहिए पास-ए-अदब
वो जो रूठे तो अधूरी गुफ्तुगू रह जाएगी

◆ ◆ ◆

ग़ैर के आने न आने से भला क्या फ़ाएदा
तुम तो आ जाओ तो मेरी आबरू रह जाएगी
इस भरी महफ़िल में तेरी एक मैं ही तिश्ना-लब
साक़िया क्या ख्वाहिश-ए-जाम-ओ-सुबू रह जाएगी

◆ ◆ ◆

हम अगर महरूम होंगे अहल-ए-फ़न की दाद से
शेर कहने की किसे फिर आरज़ू रह जाएगी

-ज़मील मुरस्सापुरी

• हवा का झोंका पुकारता है..

किसे दरीचा पुकारता है
मैं क़ैद कब तक रहूंगा आख़िर
शजर का साया पुकारता है
पुरानी यादें समेट लेना
गुज़रता लम्हा पुकारता है
लो उड़ गई शोख़ रंग तितली
बदन का सहरा पुकारता है
परों का सस्ते सफ़र है रौशन
कहीं परिंदा पुकारता है
कहीं सदा दे रही हैं शामें
कहीं सवेरा पुकारता है

-जयंत परमार